Lecture Series No:→ 20

Topic,

(1) S.R Maitra: Fundamental Questions,

Dr. Sunita Kumari
Department of Philosophy B.A Part-II
Paper - III

Ans:→ किसी भी शास्त्र के सव्यवस्थित अध्ययन के लिए सबसे पहले उनके मौलिक को समझना आवश्यक है।

नीतिशास्त्र शुभ का विज्ञान है। जो मानव के परम शुभों का व्याख्या करता है। उचित और अनुचित कार्यों का निर्णय करता है।

अत: इनके मौलिक तत्वों की व्याख्या करना अनुचित है।

अत: इनके मौलिक प्रत्ययों की चर्चा करना अपेक्षित है। अपेक्षिक का अर्थ होता वैचारिक रूप से अपनी सुन्दर तालिका का उपयोग में लाना कोई भी कार्य को नियम पूर्वक निपटाना कहलाता है। (S.R Maitra Fundamental Question) इसी बात पर ध्यान देने में

p.T.O.

प्रतीत होता है।

नैतिक के क्षेत्र में हम नैतिक क्रिया या व्यक्ति द्वारा सम्पादित क्रियाओं पर नैतिक निर्णय देते हैं।

और उसी क्रम मे भिन्न भिन्न प्रत्ययों जैसे उचित या अनुचित, शुभ या अशुभ, अच्छा या बुरा, चाहिए या ना चाहिए, कर्तव्य या अकर्तव्य पाप या पुण्य का प्रयोग करते हैं। इन्हु प्रत्ययों में शुभ सम्प्रत्ययों में से शुभ सम्प्रत्यय संप्रत्ययों का स्थान शुभ माना जा सकता है।

शुभ के लिए अंग्रेजी शब्द good का प्रयोग किया गया है। किया जाता है तथा good शब्द मे जर्मन शब्द Gut से बना है। जिसका प्रयोग हम सद्भावनाओं के द्वारा हम समझ सकते हैं। हम सद्भावनाओं के प्रकाशन हेतु करते हैं किन्तु जब हम शुभ

P.T.O.

या इसके अंग्रेजी रूपान्तरण शब्द good के ऊपर विश्लेषणात्मक ढंग से विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि इसका प्रयोग न कि नैतिक निर्णय के (लिए किया गया है)

नैतिक निर्णय के प्रसंग में किया जाता है। man, तो यहाँ उदाहरणस्वरूप :- जब हम यह कहते हैं कि He is a good man, तो यहाँ good शब्द का प्रयोग हम नैतिक अर्थ में हम यह कहते हैं। लेकिन कोई डॉक्टर यह कहता है कि :- This is a good Cancer तो यहाँ good शब्द का प्रयोग नैतिक अर्थ में किया गया है, क्योंकि यहाँ डॉक्टर या चिकित्सक के कहने का अर्थ है कि इस रोग में कैंसर के सभी लक्षण मौजूद हैं। इस प्रकार यहाँ good शब्द निर्नैतिक अर्थ में किया गया है। नैतिक अर्थ में भी good शब्द का प्रयोग दो रूपों में किया जाता है (1) संज्ञा के रूप में (2) विशेषण के रूप में etc. END.